Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 15

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

13 अप्रैल 2017 ई   15 रजब 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

वह अंतिम महदी जो इस्लाम के पतन के समय और गुमराही के फैलने के ज़माने में सीधा ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और आसमानी मायदा नए सिरे से इंसानों के आगे पेश करने वाला अल्लाह तआला की तकदीर में नियुक्त किया गया था, जिस का सुसमाचार आज से तेरह सौ साल पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया था, वह मैं ही हूँ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला ने समय की वर्तमान स्थिति को देखकर और ज़मीन को विभिन्न प्रकार के दुराचार तथा अनाचार और त्रुटि से भरा पाकर मुझे सच्चाई की तब्लीग़ और सुधार के लिए तैनात फरमाया और यह युग भी ऐसा था कि ... इस दुनिया के लोग तेरहवीं शताब्दी हिजरी को समाप्त करके चौदहवीं सदी के सिर पहुंच गए थे। तब मैंने उस आदेश के पालन से साधारण लोगों में लिखित विज्ञापन और भाषणों के द्वारा यह घोषणा करनी शुरू की कि इस सदी के सिर पर जो ख़ुदा तआला की ओर से धर्म के नवीकरण के लिए आने वाला था वह मैं ही हूं, वह ईमान जो पृथ्वी पर से उठ गया है इसे फिर से स्थापित करना है और ख़ुदा तआला से शक्ति पाकर उसी के हाथ के आकर्षक से दुनिया को सुधार और तक्वा और सच्चाई की तरफ खींचूं और उनकी आस्था तथा व्यावहारिक ग़लतियों को दूर करूं और फिर जब इस पर कुछ साल गुज़रे तो अल्लाह तआला की वह्यी से मेरे पर स्पष्ट रूप से खोला गया कि वह मसीह जो उम्मत के लिए आरम्भ से मौऊद था, और वह अंतिम महदी जो इस्लाम के पतन के समय और गुमराही के फैलने के ज़माने में सीधा ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और आसमानी मायदा नए सिरे से इंसानों के आगे पेश करने वाला अल्लाह तआला की तकदीर में नियुक्त किया गया था, जिस का सुसमाचार आज से तेरह सौ साल पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया था, वह मैं ही हूँ। और इलाही वार्तालाप और रहमानी ख़िताब इस सफाई और निरन्तरता से इस बारे में हुए कि शक की जगह न रही। प्रत्येक वह्यी जो होती एक फौलादी कील की तरह दिल में धंसी थी और यह सभी इलाही वार्तालापों से ऐसी भव्य पेशगोइयों से भरी हुई थी कि दिन की रोशनी की तरह वह पूरी होती थीं। और उनकी निरन्तरता और बहुतायत और चमत्कारी शक्तियों के करिश्मा ने मुझे इस बात की स्वीकारोक्ति के लिए मजबूर किया कि यह उसी वाहिद लाशरिक ख़ुदा की वाणी है जिसकी वाणी कुरआन शरीफ है। और मैं इस जगह तौरात और इंजील का नाम नहीं लेता। क्योंकि तौरात और इंजील विकृत करने वालों के हाथों से इस कदर परोक्ष और परिवर्त हो गई हैं कि अब इन किताबों को ख़ुदा की वाणी नहीं कह सकते। अत: वह ख़ुदा की वह्यी जो मेरे पर नाज़िल हुई ऐसी निश्चित और दृढ़ है कि जिस के द्वारा मैंने अपने ख़ुदा को पाया और वह वह्यी न केवल आसमानी चिन्ह द्वारा यकीन के स्तर तक पहुंची बल्कि प्रत्येक भाग इसका जब ख़ुदा तआला के कलाम कुरआन शरीफ पर प्रस्तुत किया गया तो उसके अनुसार साबित हुआ। और इसकी पुष्टि के लिए बारिश की तरह आसमानी निशान बरसे। इन्हीं दिनों में रमज़ान के महीने में सूर्य और चंद्रमा का ग्रहण भी हुआ जैसा कि लिखा था कि महदी के समय में रमज़ान में सूर्य और चंद्रमा का ग्रहण होगा। और उन्ही दिनों में प्लेग भी अत्यधिक पंजाब में हुई। जैसा कि कुरआन शरीफ में यह खबर मौजूद है। और पहले नबियों ने भी यह खबर दी है कि इन दिनों में प्लेग बहुत होगा और ऐसा होगा कि कोई गांव और शहर इस प्लेग से बाहर नहीं रहेगा। तो ऐसा ही हुआ और हो रहा है।

(तज़करतुश्शहादतैन, रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 3,4)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संक्षिप्त इतिहास तथा धार्मिक सेवाऐं (भाग-3)

अनुवादक : शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

पेशगोई (भविष्यवाणी) मुस्लेह मौऊद

1886 ई. के आरम्भ में आप अल्लाह तआला के आदेश अनुसार होशियारपुर तशरीफ़ ले गए। वहाँ पर एक अलग मकान में चालीस दिन तक भक्ति में लीन रहे। और इस्लाम की उन्नति तथा प्रचार के लिए विशेषता से दुआओं में लगे रहे। इन दुआओं तथा भक्ति के परिणामस्वरूप अल्लाह तआला ने आपको एक महान सूचना दी। जो हमारी जमाअत के इतिहास में पेशगोई मुस्लेह मौऊद के नाम से प्रसिद्ध है। इस पेशगोई (भविष्यवाणी) में अल्लाह तआला ने आपको अगले नौ वर्ष के अन्दर एक ऐसे पुत्र की बशारत दी थी जिसके द्वारा इस्लाम तथा अहमदिय्यत को विशेष उन्नति प्राप्त होनी थी। तथा जिसने दुनिया के किनारों तक प्रसिद्धि पानी थी। भविष्यवाणी का एक भाग इस प्रकार है :-

''मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ। उसी के अनुसार जो तू ने मुझ से माँगा... अत: क़ुदरत, रहमत और क़ुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल तथा एहसान का निशान तुझे प्रदान होता है। तथा विजय और सफ़लता की कलीद तुझे मिलती है।... उसके साथ फ़ज़ल है जो उसके आने के साथ आएगा। वह साहिबे शकोह और अज़मत और दौलत होगा। वह दुनिया में आएगा और अपने मसीही नफ़्स और रुहुल्ल हक की बरकत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह क़लमतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमतो ग़य्यूरी ने उसे कलमए तमजीद से भेजा है। वह सख़्त ज़हीनो फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे ज़ाहरी व बातनी से पुर किया जाएगा... नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अपनी रज़ामन्दी के इतर से ममसूह किया। हम उसमें अपनी रूह ड़ालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सर पर होगा। वह जल्द जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मूजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शुहरत पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाएँगी। तब अपने नफ़्सी नुक्ता आसमान की तरफ़ उठाया जाएगा।" (इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886 ई.)

इस महान भविष्यवाणी के अनुसार नौ वर्ष के अन्दर12 जनवरी 1889 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब (ख़लीफ़तुल मसीहिस्सानी) रज़ियल्लाहो अन्हो पैदा हुए। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तिका ''सिराजे मुनीर" में यह ऐलान फ़र्मा दिया कि जिस महान पुत्र की अल्लाह तआला ने मुझे ख़बर दी थी उसका जन्म हो गया है। और फिर बाद में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिस्सानी रज़िल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त के समय की महान घटनाओं ने यह साबित कर दिया कि यह भविष्यवाणी आप के द्वारा पूरी हो गई। क्योंकि भविष्यवाणी के इल्हामी शब्दों में इस पुत्र की जो जो निशानियाँ बताई गई थीं वह सब की सब अपनी पूरी शान के साथ पूरी हो गईं। अल्हम्दो लिल्लाहे अला ज़ालिक।

वफ़ाते मसीह(अ) का ऐलान तथा मसीह मौऊद होने का दावा

1890 ई. के अन्त में अल्लाह ने आपको बताया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी अन्य अवतारों के समान फ़ौत हो चुके हैं। तथा यह अक़ीदा (विश्वास) ग़लत तथा क़ुर्आन करीम की शिक्षा के विरुद्ध है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब तक आकाश पर जीवित हैं। अत: आपने1891 ई. के आरम्भ में इसका ऐलान किया और इसके साथ ही आपने अल्लाह तआला के आदेश से यह दावा भी फ़र्माया कि जिस मसीह तथा मेहदी के आने की भविष्यवाणी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माई थी वह मैं ही हूँ। जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माने में मसीह अलैहिस्सलाम के गुण दे कर संसार का सुधार करने तथा इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को संसार में स्थापित करने तथा फैलाने के लिए भेजा है।

इस ऐलान तथा दावे का परिणाम यह हुआ कि जहाँ प्रत्येक वर्ग के बहुत से नेक लोग आप पर ईमान ले आए वहाँ देश के एक कोने से दूसरे कोने तक विरोध की आग भी भड़क उठी। अपने तथा बेगाने सभी आपके शत्रु हो गए। मुसलमान मौलवियों ने आप पर कुफ़्र के फ़त्वे लगा दिए तथा दूसरी ओर ईसाइयों ने भी आपका घोर विरोध आरम्भ कर दिया। क्योंकि मसीह की मृत्यु के ऐलान से ईसाइय्यत की नींव हिल जाती थी। और उनका ख़ुदा (वह मसीह को ख़ुदा मानते हैं) मृतक साबित हो जाता था।

मुनाज़रे

इस विरोध के परिणामस्वरूप आपको विरोधी मौलवियों तथा ईसाइयों से कई मुनाज़रे करने पड़े। अत: 1891 ई. में मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, मौलवी सय्यद नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी तथा मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भोपालवी से तथा 1892 ई. में मौलवी अब्दुल हकीम साहिब कलानौरी से आपके मुनाज़रे हुए । तथा 1893 ई. में प्रसिद्ध ईसाई पादरी अब्दुल्लाह आथम से आपका मुनाज़रा हुआ । इन मुनाज़रों के परिणामस्वरूप अनेक लोगों को आप पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ मिली।

जलसा सालाना

1891 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा सालाना की नींव रखी। दिसम्बर 1891 ई. में जमाअत अहमदिया का पहला जलसा सालाना आयोजित हुआ। यह जलसा क़ादियान की मस्जिद अक़्सा में हुआ और इसमें केवल 75 लोग शामिल हुए। 1892 ई. में जब यह जलसा हुआ तो उसमें 327 लोग शामिल हुए। इसके बाद यह जलसा सिवाय कुछ एक नाग़ों के हर वर्ष आयोजित होता रहा। और अल्लाह तआला ने इसमें ऐसी बरकत ड़ाली कि अब लाखों लोग इस जलसे में सम्मिलित होते हैं।

पादरी अब्दुल्लाह आथम के साथ मुबाहिसा तथा भविष्यवाणी

1893 ई. में अमृतसर में 22 मई से लेकर 5 जून तक आपने प्रसिद्ध पादरी अब्दुल्लाह आथम के साथ लिखित मुबाहिसा (बहस) किया। जो ''जंगे मुक़द्दस" के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। इस मुबाहिसा में आपको अल्लाह तआला ने इतनी कामयाबी प्रदान की कि मुबाहिसे के बीच में ही कई लोगों ने बैअत करने और अहमदिया जमाअत में सम्मिलित होने का ऐलान कर दिया।

इस मुबाहिसे के बीच एक अनोखी घटना हुई। ईसाई कुछ लूले लंगड़े और अन्धे इकट्ठे करके ले आए और यह कहने लगे कि हमारे यसूअ मसीह तो लूले लंगड़े और अन्धों को अच्छा किया करते थे। यदि आप मसीह मौऊद होने के दावे में सच्चे हैं तो आप भी इनको अच्छा करके दिखाएँ। ईसाई अपने दिल में बहुत ख़ुश थे कि आज हमने (हज़रत) मिर्ज़ा साहिब को शर्मिंदा करने के लिए खूब उपाय सोचा है। परन्तु जब ईसाइयों ने यह बात कह कर इन अन्धों तथा लंगड़ों को प्रस्तुत किया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके उत्तर में फ़र्माया कि यह तो आपकी इंजील कहती है कि हज़रत मसीह सचमुच के अन्धे लूले तथा लंगड़ों को हाथ लगा कर ठीक कर दिया करते थे। हमारा क़ुर्आन मजीद तो कदापि यह नहीं कहता तथा न हम इसके क़ाइल हैं । हाँ आपकी इंजील में तो यह भी लिखा है कि हे ईसाइयो ! यदि तुम में ज़रा सा भी ईमान होगा तो तुम इससे भी बढ़ कर अद्भुत काम कर सकोगे। अत: हम इन रोगियों को तुम्हारे सामने ही प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि इंजील के कहने के अनुसार यदि ज़रा सा भी ईमान तुम्हारे भीतर है तो इन रोगियों पर हाथ रख कर इन्हें अच्छा कर दो। यदि तुमने अच्छा कर दिया तो हम तुम्हें सच्चा समझेंगे। अपितु दुनिया समझ लेगी कि स्वयं तुम्हारी इंजील के कहने के अनुसार तुम में अब ज़रा सा भी ईमान नहीं है ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह उत्तर दिया तो ईसाई शर्मिंदा हो कर रह गए और कोई उत्तर न दे सके। उन्होंने हुज़ूर को दु:ख तथा चोट पहुँचाने के लिए यह चाल चली थी परन्तु यह उलट कर उन्हीं पर पड़ी और उन के लिए ही लज्जा का कारण बन गई।

इस मुबाहसे के बीच हुज़ूर ने यह भविष्यवाणी भी फ़र्माई कि इस बहस में जो पक्ष जानबूझ कर झूट बोल रहा है और सच्चे ख़ुदा को छोड़कर एक कमज़ोर मनुष्य को ख़ुदा बना रहा है वह पन्द्रह महीनों तक हाविया (अर्थात घोर मुसीबत) में ड़ाला जाएगा। तथा यदि उसने सत्य को स्वीकार न किया तो ख़ुदा तआला उसे अत्यन्त ज़लील (अपमानित) करेगा।

(तज़करह पृष्ठ 239)

इस भविष्यवाणी में स्पष्टत: यह कहा गया था कि यदि आथम ने रजूअ न

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की कृपा से अब दुनिया के कई देशों में जामिया अहमदिया की स्थापना हो चुकी है जहां से मुरब्बियान अपनी पढ़ाई पूरी करके कार्य क्षेत्र में आ चुके हैं और आ रहे हैं।

जमाअत को मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों की ज़रूरत है और यह ज़रूरत बढ़ रही है बल्कि बढ़ गई है इसलिए अधिकतम वाकफीन नौ को जामिया अहमदिया में अध्ययन करने के लिए आना चाहिए । माता पिता बचपन से ही लड़कों को इस तरफ ध्यान दिलाएं और उन्हें प्रशिक्षित करें। ऐसा प्रशिक्षण कि उन्हें जामिया अहमदिया में प्रवेश का शौक पैदा हो।

मुरब्बियान को पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि उन्होंने प्रशासनिक लिहाज़ से जो भी उन पर निर्धारित किया गया है उस का पालन करना है और अपनी आज्ञाकारिता का नमूना दिखाना है। सदर साहिबों और ओहदेदारों से भी कहता हूं कि मुरब्बियान के सम्मान को स्थापित करना उनका काम है और किसी भी जमाअत में सबसे अधिक मुरब्बी का आदर करने वाला और सहयोग के साथ और परामर्श के साथ चलने वाला सदर जमाअत और अमीर जमाअत होना चाहिए और इसी तरह बाकी ओहदेदारों को भी अपने दायरे में मुरब्बी के साथ सहयोग करने वाले हों और मुरब्बी भी सही विनम्रता और तक्वा के साथ सदर जमाअत या अमीर जमाअत से भरपूर सहयोग करे।

जमाअत की सेवा में तो तक्वा ही है जो वास्तविक और लोकप्रिय सेवा की तौफीक दे सकता है।

सदर और अमीर और सभी जमाअत के उहदेदारों का काम बल्कि जिम्मेदारी है कि मुबल्लिग़ों बल्कि जितने भी वाकफीन ज़िन्दगी है उनकी इज़्ज़त और सम्मान अपने दिल में भी पैदा करें और जमाअत के व्यक्तियों के दिलों में भी पैदा करें। उनका सम्मान करना और करवाना आप लोगों का काम है ताकि मुरब्बी और मुबल्लिग़ और वक्फ ज़िन्दगी के स्थान का महत्व स्पष्ट हो और अधिक से अधिक युवा जमाअत की सेवा के लिए अपने आप को पेश करें।

वाकफीन नौ युवकों और कार्य क्षेत्र में युवा मुरब्बियान को भी मैं यह कहना चाहूंगा कि दुनिया चाहे आपके स्थान को समझे या न समझे कोई सदर अमीर या अधिकारी बल्कि कोई जमाअत का व्यक्ति भी आप की गरिमा और सम्मान करे या न करे तो अल्लाह तआला के साथ कुरबानी करने का जो वादा किया है उसे नेक निय्यत से निभाते रहें।

उहदेदारों और विशेष रूप से सदर और अमीर यह भी याद रखें कि जमाअत के लोगों के लिए भी हमेशा प्यार और मुहब्बत के पर फैलाएं। जमाअत का कोई पद भी किसी प्रकार की बड़ाई पैदा करने के लिए नहीं है बल्कि विनम्रता में बढ़ाने के लिए है। इसलिए हर निर्णय और हर काम को अल्लाह तआला का डर दिल में रखते हुए और बेहद विनम्रता से न्याय की मांग को पूरा करते हुए कोशिश करनी चाहिए। ज़ैली संगठनों के ओहदेदार भी अपनी जिम्मेदारियों को समझें। उप संगठन भी अंसार भी लजना भी ख़ुद्दाम भी प्रत्येक स्तर पर सक्रिय हों।

प्रत्येक ओहदेदार जो है, धर्म की सेवा को अल्लाह तआला का एहसान समझते हुए करे और प्रत्येक से सहयोग भी करें। जमाअत की प्रणाली सदर ओहदेदारों और उप संगठनों का भी एक-दूसरे से सहयोग होना चाहिए। अगर यह आपसी सहयोग और सभी ज़ैली संगठन और जमाअत का निज़ाम भी सक्रिय हो तो जमाअत के विकास की गति कई गुना बढ़ सकती है।

जमाअत के लोगों से मैं यह कहना चाहूंगा कि वे भी अपने तक्वा की गुणवत्ता बढ़ाएं। नेकी और तक़वा में सहयोग का उन्हें भी आदेश है। अगर जमाअत के लोगों में गुणवत्ता नेकी और तक्वा में अधिक होंगे तो ओहदेदार अपने आप नेकी और तक्वा में चलने वाले मिलते जाएंगे। जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए जो उसके जिम्मेदारी आज्ञाकारिता के हवाले किया गया है। यह एक बड़ा दायित्व है जो जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति के सुपुर्द भी है कि तुम आज्ञापालन करो। आप के पालन का नमूने जहां आप को जमाअत से संबंध में बढ़ाएगा वहाँ फिर अगली नस्लों को भी जमाअत से जोड़े रखेंगे। नस्लों के तक्वा के अच्छाई की गुणवत्ता बढ़ाने वाले होंगे अगर भविष्य में बुलंद हैं और बढ़ते चले जाएं तो भविष्य की नस्लें भी तक्वा पर चलेंगी और ओहदेदार भी मिलते चले जाएंगे।

कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में अमीरों, सदरों, ज़ैली तंज़ीमों के अहदेदारों तथा मुरब्बियों एवं मुबल्लग़ों को बहुत महत्त्वपूर्ण नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 मार्च 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُولُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ -

अल्लाह तआला की कृपा से अब दुनिया के कई देशों में जामिया अहमदिया की स्थापना हो चुकी है जहां से मुरब्बियान अपनी पढ़ाई पूरी करके कार्य क्षेत्र में आ चुके हैं और आ रहे हैं। पहले केवल रबव: और कादियान के जामिया थे जहां से शाहिद मुरबियान मुहैया होते थे। पिछले दिनों यहां यू.के के जामिया अहमदिया में भी जामिया अहमदिया से पास होने वालों की convocation हुई जो कनाडा और यू.के के जामिया के पास होने वाले छात्रों की संयुक्त convocation थी। इस से शाहिद की डिग्री लेकर ख़ुद को मुरब्बी के रूप में सेवा के लिए प्रस्तुत करने वाले वे लोग हैं जो यहाँ पश्चिमी माहौल में पले-बढ़े और अपने स्कूल की पढ़ाई पूरी करके अपने आप को जामिया की शिक्षा के लिए पेश किया और सफल हुए। उनमें से अधिकांश बल्कि लगभग सभी वे हैं जो वक्फ नौ तहरीक में शामिल हैं। पश्चिमी देशों में रहते हुए जहां दुनियादारी और सांसारिक चमक चरम पर है, अपने आप को वक्फ कर के अल्लाह तआला के धर्म के सैनिकों में शामिल होने के लिए पेश करना निश्चित रूप से उनकी शालीनता और धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के नियम

को पूरा की अभिव्यक्ति है लेकिन यह याद रखना चाहिए कि अब यह अल्लाह तआला की कृपा के बिना संभव नहीं। इसलिए उन्हें भी और जो इस समय पश्चिमी देशों के जामियों में पढ़ रहे हैं उन्हें भी या सामान्य जामिया में, सामान्य से अभिप्राय दूसरे देशों में, जो पढ़ रहे हैं अपने अंदर विनम्रता पैदा करते हुए विशेष रूप से इसे अल्लाह तआला की कृपा के कारण समझना चाहिए और उसके आगे झुकते हुए उसके फज़ल की तलाश हमेशा करते रहना चाहिए।

इसी तरह मैंने जामिया अहमदिया की convocation में भी कहा था कि जमाअत को मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों की ज़रूरत है और यह ज़रूरत बढ़ रही है बल्कि बढ़ गई है इसलिए अधिकतम वाक़फीन नौ को जामिया अहमदिया में अध्ययन करने के लिए आना चाहिए। माता पिता बचपन से ही लड़कों को इस तरफ ध्यान दिलाएं और उन्हें प्रशिक्षित करें। ऐसा प्रशिक्षण कि उन्हें जामिया अहमदिया में प्रवेश का शौक पैदा हो।

इस समय रबव: और कादियान के अतिरिक्त अल्लाह तआला की कृपा से यू.के और जर्मनी में भी जामिया हैं जिनमें यूरोप में रहने वाले अध्ययन कर सकते हैं। कनाडा में जामिया अहमदिया है वहाँ नियमित सरकारी संस्था से पारित हो चुका है वहाँ कुछ अन्य देशों भी छात्र आ सकते हैं और आए हुए हैं। पढ़ रहे हैं। घाना में जामिया अहमदिया है इस साल वहाँ भी शाहिद की पहली जमाअत निकलेगी जहां इस समय विभिन्न देशों से आए छात्र पढ़ रहे हैं। बांग्लादेश में भी जामिया अहमदिया है। इंडोनेशिया में भी जामिया अहमदिया को शाहिद के पाठ्यक्रम के लिए बढ़ा दिया गया है।

इसलिए वाकफीन नौ बच्चों को कोशिश करनी चाहिए कि जामिया में प्रवेश करें और जैसा कि मैंने कहा उसके लिए अपने माता पिता को तैयार करना चाहिए। हमारे जामिया में जितनी भी क्षमता है कम से कम वह पूरी होनी चाहिए। तभी हमें इस समय जो मुबल्लिग़ों और मुरब्बियान की ज़रूरत है उसे पूरा कर सकते हैं।

इस समय मैं कार्य क्षेत्र में आने वाले मुरब्बियान के मन में जो कुछ प्रश्न आते हैं, उनका वे उल्लेख भी कर देते हैं या पूछते हैं उनका भी उल्लेख करना चाहता हूँ। इन मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों को मैं कहता ही रहता हूँ इन सवालों के जवाब देता हूँ यहाँ उल्लेख इसलिए ज़रूरी है ताकि जो जमाअत की प्रणाली के ओहदेदार हैं उन्हें भी पता चल जाएगा कि आपस में एक दूसरे के साथ सहयोग से कैसे उन्होंने काम करना है अर्थात मुरब्बियान और मुबल्लिग़ों और ओहदेदारों का सहयोग। इसमें विशेष रूप से सदर तथा अमीर हैं क्योंकि कई बार ओहदेदारों के साथ ग़लतफहमी की वजह से कुछ खिचावट पैदा हो जाती है। आपस के संबंध पूरी तरह से सहयोग के नहीं रहते या एहसास एक पक्ष में पैदा होता है कि सहयोग नहीं है।

मुरब्बियान के ये सवाल होते हैं कि हमारे कार्यों में सदर जमाअत किस हद तक हस्तक्षेप कर सकता है? हमारी क्या सीमाएं हैं और उनकी क्या सीमाएं हैं।? कई बार मुरब्बी एक बात को प्रशिक्षण के मामले में बेहतर समझता है और बेहतर समझ कर जमाअत में प्रचलित करने की कोशिश करता है तो सदर जमाअत कहता है कि मैं नहीं समझता कि इस तरह करना चाहिए। या कुछ सदरान अपने स्वभाव के अनुसार और एक लंबा समय सदर जमाअत रहने की वजह से समझते हैं कि जो वे कहते हैं वह ठीक है और मुरब्बी को उनकी मर्ज़ी के अनुसार चलना चाहिए और फिर कई बार एक लोगों के सामने ही, एक मज्लिस के सामने ही मुरब्बी से ऐसे ढंग से जवाब मांगते और बात करते हैं जो नहीं करनी चाहिए और नौजवान मुरब्बी इस बात पर फिर परेशान होते हैं या बुरा मनाते हैं या लज्जा महसूस करते हैं या हो सकता है कि आगे से कोई जवाब भी दे दें।

अत: मुरब्बियान को पहली बात तो यह याद रखना चाहिए कि उन्होंने प्रशासनिक लिहाज़ से जो भी उन पर निर्धारित किया गया है उस का पालन करना है और अपनी आज्ञाकारिता का नमूना दिखाना है और खामोश रहना है और अगर ऐसे हालात पैदा हों तो ख़ामोश रहना है ताकि जमाअत के लोगों पर किसी प्रकार का नकारात्मक असर न पड़े और जमाअत में कोई बैचेनी पैदा न हो। अगर कोई दुरुपयोग की बात है तो अपने राष्ट्रीय अमीर, सदर को या केंद्र में बताएँ। मुझे भी लिख सकते हैं।

इसी तरह सदर साहिबों और ओहदेदारों से भी मैं कहता हूं कि मुरब्बियान के सम्मान को स्थापित करना उनका काम है और किसी भी जमाअत में सबसे अधिक मुरब्बी का आदर करने वाला और सहयोग के साथ और परामर्श के साथ चलने वाला सदर जमाअत और अमीर जमाअत को होना चाहिए और इसी तरह बाकी ओहदेदारों भी अपने अपने दायरे में मुरब्बी के साथ सहयोग करने वाले हों और मुरब्बी भी सही विनम्रता और तक्वा के साथ सदर जमाअत या अमीर जमाअत से भरपूर सहयोग करे।

उद्देश्य तो हमारा एक है कि जमाअत लोगों की शिक्षा और प्रशिक्षण, जमाअत की प्रणाली का सम्मान स्थापित करना, ख़िलाफत से प्रतिबद्धता पैदा करना और तौहीद की स्थापना करना। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को दुनिया में फैलाना। इसमें सीमाओं और कामों का क्या सवाल है। आपस में एक होकर काम करना चाहिए और इस बारे में अल्लाह तआला के इस बुनियादी इरशाद को सामने रखना चाहिए कि تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ التَّقْوٰى (अल्माइदा :3)अर्थात अच्छाई और नेकी के कार्यों में एक दूसरे की मदद करें। हर कोई जानता है कि जमाअत की सेवा चाहे किसी रंग में भी करने के लिए मदद मिल रही हो इससे बड़ी और कोई नेकी नहीं है और सेवा करने के लिए तक्वा की भी आवश्यक है। जमाअत की सेवा में तो तक्वा ही है जो वास्तविक और लोकप्रिय सेवा की तौफीक़ दे सकता है। यह काम तो है ही अल्लाह तआला का तक्वा मन में रखते हुए ख़ुशी पाने का। इसलिए मुरब्बियान के लिए भी और उहदेदारों के लिए भी जो सीमा निर्धारित की गई हैं वे नेकी की प्राप्ति और तक्वा पर चलना है ताकि जहां आपस में प्रेम और भाईचारे के संबंध स्थापित हों वहां जमाअत के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में भी दोनों अपना अपना किरदार अदा कर रहे हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार फरमाया कि

"تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ التَّقْوٰى का अर्थ है कमज़ोर भाइयों का बोझ उठाओ। व्यावहारिक, ईमानी और वित्तीय कमज़ोरियों में भी सम्मिलित हो जाओ। शारीरिक कमज़ोरियों का भी इलाज करो" और यह तभी संभव है जब जमाअत के लोगों का दर्द रखते हुए जमाअत के उहदेदार भी और मुरब्बियान भी मिलजुल कर काम करें व्यावहारिक कमज़ोरियों या ईमानी कमज़ोरियों में सम्मिलित होने का यह मतलब नहीं है कि आप भी वैसे हो जाओ बल्कि इसका मतलब यह है कि व्यावहारिक और ईमानी कमज़ोरियों को दूर करने के लिए जो सदर जमाअत और ओहदेदारों का क्षेत्र है वह उसके अनुरूप करे और जो मुरब्बियान के धार्मिक ज्ञान में सुधार होने और प्रशिक्षण के लिए समय के ख़लीफा के प्रतिनिधि की हैसियत से काम है वह उसे करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आगे यह परिभाषित किया कि "कोई जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जब तक निर्बलों को शक्ति वाले सहारा नहीं देते।" अत: जमाअत की प्रणाली इसलिए बनाई जाती है कि जमाअत के लोगों क आध्यात्मिक ज्ञान और शारीरिक सुधार के लिए कार्यक्रम बनाया जाऐं।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "बड़ा छोटे की सेवा करे और लचीलेपन के साथ व्यवहार करे।" यह जहाँ ओहदेदारों और विशेष रूप से सदरों और अमीरों के जमाअत के लोग के साथ संबंध में ज़रूरी बात है वहाँ सदर जमाअत और मुरब्बी के संबंध के लिए भी बड़ा आवश्यक है। नेकी और तक्वा के साथ एक दूसरे से व्यवहार के कारण जमाअत के लोगों के सामने नेक नमूने स्थापित होंगे जो जमाअत के लोगों के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

यह देखने में आया है कि कई बार जहां थोड़ी सी भी सदर या उहदेदारों या मुरब्बियान के संबंध में कमी है या कोई हल्का सा भी शिकवा आपस में पैदा हुआ है तो वहां शैतान अंदर घुसने की कोशिश करता है और नेकी और तक्वा की जड़ें हिलनी शुरू हो जाती हैं। कुछ मुरब्बी के हमदर्द बनकर उसे कहते हैं कि तुम्हारे साथ सदर जमाअत ने अच्छा व्यवहार नहीं किया और कुछ लोग सदर जमाअत को कहते हैं कि मुरब्बी को यह रवैया नहीं अपनाना चाहिए था। जिन लोगों का सुधार सदर जमाअत और मुरब्बी काम था उन में से ही कुछ सदर और मुरब्बी के बीच की खाई और दूरी बनाने की कोशिश करते हैं और परिणाम स्वरूप लोगों में फिर चिंता पैदा हो जाती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "देखो वह जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिलकर बैठें तो एक अपने ग़रीब भाई का शिकवा और आलोचना करते रहें।" फरमाया "ऐसा बिल्कुल नहीं चाहिए बल्कि आम सहमति में चाहे शक्ति आ जाए" (इकट्ठे हो जाओ। एक बन जाओ ताकि शक्ति पैदा हो इसमें शक्ति पैदा करो) "और एकता पैदा हो जाए जिस से मुहब्बत आती है और बरकतें पैदा होती हैं।"

फरमाया कि "नैतिक शक्तियों को विस्तृत किया जाए और यह तब होता है जब सहानुभूति प्यार क्षमा और दया को सार्वजनिक किया जाए और सभी आदतों पर दया और छिपाने को प्राथमिकता दी जाए।" इंसान में और विशेष रूप से ओहदेदारों

और मुरब्बियान में जितनी आदतें हैं जिनके ज़िम्मे बहुत काम हैं उन का यह काम है फरमाया कि दया और छिपाना को हर आदत पर प्राथमिकता कर लो। दया सबसे अधिक तुम्हारे अंदर हो। दूसरों की सहानुभूति सबसे अधिक तुम्हारे अंदर हो। बुराइयों को छिपाना सबसे अधिक तुम्हारे अंदर हो। फरमाया कि "थोड़ी थोड़ी सी बात पर ऐसी सख्त गिरफ़्तें नहीं होनी चाहिए जो दिल तोड़ने और दु:ख का कारण होती हैं।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 347-348 प्रकाशन 1985 ई यू, के)

यह संदर्भ देने का यह मतलब नहीं कि खुदा न चाहे जमाअत के उहदेदारों और विशेष रूप से सदर या अमीर और मुरब्बी के बीच जमाअत में प्राय मतभेद पाए जाते हैं। नहीं कभी यह बात नहीं है शायद छिटपुट ऐसी घटनाएं होती हैं कम से कम मेरी जानकारी में साल में एकाध बार ही आते हैं। ये सभी बातें मैंने खोलकर इसलिए बता दिया है कि सदर, अमीर और मुरब्बियान को पता हो कि उनके काम बड़े व्यापक हैं और एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हमारे सामने है और अगर कभी ख़ुदा न चाहे आपस में मतभेद पैदा हो तो उस के तुरंत समाधान होने चाहिए क्योंकि कई बार देखने में आया है कि आपस के मतभेद आपस में नहीं रहते बल्कि जमाअत के लोगों पर भी इसका असर पड़ता है और शैतान, जैसा कि पहले भी मैंने कहा इससे अवैध लाभ उठाता है इसलिए हमेशा दोनों यह बड़ा उद्देश्य अपने सामने रखें कि जमाअत के बौद्धिक आध्यात्मिक और प्रशासनिक प्रशिक्षण की जो ज़िम्मेदारी उन पर डाली गई है वह दोनों ने मिलकर अदा करनी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बड़ा स्पष्ट यह फ़रमाया है कि सही परिणाम तभी मिल सकता है जब आपस में मिलजुल कर काम करो। आपने फरमाया कि "जो काम दो हाथ के मिलने से होना चाहिए वह केवल एक हाथ से अंजाम नहीं पा सकता" और फरमाया कि "जिस मार्ग को दो पैर मिलकर तय करते हैं वे केवल एक ही पैर से तय नहीं हो सकता।" फरमाया कि "इसी तरह सभी सफलता हमारे समाज और भविष्य के सहयोग पर ही आधारित हो रही है क्या कोई अकेला व्यक्ति किसी काम धर्म या दुनिया को अंजाम दे सकता है? कभी नहीं। कोई काम धार्मिक हो या सांसारिक बिना आपसी सहायता के चल ही नहीं सकता।"

(ब्राहीने अहमदिया रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 59)

फिर आप ने यह भी फरमाया कि विशेष रूप से वह काम जिस का बड़ा और महान उद्देश्य है उसके लिए तो आपस का सहयोग बेहद ज़रूरी है।

(ब्राहीने अहमदिया रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 59)

इसलिए न ही सदर या अमीर को सभी अधिकार अपने हाथ में रखकर अपनी इच्छा चलाने की कोशिश करनी चाहिए और न ही मुरब्बियान को अपनी राय सही समझ कर उस पर अमल करना या करवाने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि सहयोग से काम करें और क्योंकि मुरब्बी के ज़िम्मेदारी जमाअत के प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी है और जैसा कि मैंने कहा कि उस का धार्मिक ज्ञान भी अधिक है या सामान्य होता है और होना चाहिए और इसे धार्मिक ज्ञान का विस्तार भी करते रहना चाहिए और आध्यात्मिकता को बढ़ाते रहने की भी कोशिश करते रहना चाहिए। इसलिए उसके तक्वा की गुणवत्ता साधारण लोगों से अधिक होनी चाहिए। जब इस बात को मुरब्बियान समझ लेंगे और उसके अनुसार कार्य करेंगे तो ओहदेदारों और जमाअत के व्यक्तियों के बीच ख़ुद मुरब्बियान का एक स्थान बन जाएगा।

सदर जमाअत या अमीर जमाअत को याद रखना चाहिए कि जहां प्रशासनिक प्रमुख होने के कारण जमाअत की प्रशासनिक प्रणाली को ठीक से चलाने की उनकी ज़िम्मेदारी है और इस काम में समय के ख़लीफा ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाया हुआ है इसी तरह जमाअत की धार्मिक और आध्यात्मिक सुधार और विकास और इसके लिए संभावित माध्यमों को उपयोग में लाने की ज़िम्मेदारी मुरब्बियान की है और वह इस मामले में समय के ख़लीफा के प्रतिनिधि हैं। इसलिए दोनों अमीर भी, और सदर और मुरब्बियों का आपस का सहयोग होना चाहिए और एक योजना के अनुसार काम करना चाहिए तभी जमाअत को प्रशासनिक लिहाज़ से वे मज़बूत कर सकेंगे और आध्यात्मिक और ज्ञान की गुणवत्ता भी तरक्की करते चले जाने वाले होंगे।

पहले भी संक्षिप्त उल्लेख कर आया हूँ फिर से कह देता हूं कि सदर और अमीर और सभी जमाअत के उहदेदारों का काम बल्कि ज़िम्मेदारी है कि मुबल्लिग़ों बल्कि जितने भी वाकफीन ज़िन्दगी है उनकी इज़्ज़त और सम्मान अपने दिल में भी पैदा करें और जमाअत के व्यक्तियों के दिलों में भी पैदा करें। उनका सम्मान करना और करवाना आप लोगों का काम है ताकि मुरब्बी और मुबल्लिग़ और वक्फ ज़िन्दगी के स्थान का महत्त्व स्पष्ट हो और अधिक से अधिक युवा जमाअत की सेवा के लिए अपने आप को पेश करें।

वास्तव में धर्म की सेवा के लिए समर्पित करना और मुरब्बी और मुबल्लिग़ बनना ख़ुदा तआला की ख़ुशी के लिए है, लेकिन यह समझ और एहसास जो है, यह सोच जो है यह क्रमश: बढ़ती है। युवा वाकफीन नौ को भी पूरी तरह से अपने आप को इस सेवा के लिए प्रस्तुत करने के लिए बाहरी प्रेरणा भी चाहिए जो उन के शौक को उभारे। यह मानव स्वभाव है इससे इनकार नहीं किया जा सकता और जब वक्फ और जमाअत की सेवा का एहसास पैदा हो जाए (शुरू में तो प्रेरणा चाहिए) लेकिन जब यह एहसास पैदा हो जाए ,जब अल्लाह तआला के लिए हर काम करने की समझ आ जाए तो वक्फ के साथ आध्यात्मिक तरक्की भी होती रहती है फिर एक वाक्फे ज़िन्दगी दुनिया की तरफ या दनियादारों और दुनिया वालों के व्यवहार को नहीं देखता और न देखना चाहिए और यही एक सच्चे समर्पण की भावना है।

इसलिए सदरों और अमीरों और उहदेदारों को मुरब्बियों के साथ और वाकफीन ज़िन्दगी के साथ व्यवहार में अत्यंत विनम्रता और सहयोग की भावना को बढ़ाएं ताकि भविष्य में मुरब्बियों का मिलना आसान हो और युवाओं के दिलों में अधिकतम मुरब्बी और मुबल्लिग़ बनने और वक्फ ज़िन्दगी करने की प्रेरणा हो। जैसा कि मैंने कहा हमें बड़ी संख्या में मुरब्बी चाहिए

वाकफीन नौ नौजवानों और कार्य क्षेत्र में युवा मुरब्बियान को भी मैं यह कहना चाहूंगा कि दुनिया चाहे आपके स्थान को समझे या न समझे कोई सदर अमीर या ओहदेदार बल्कि कोई जमाअत का व्यक्ति भी आप की गरिमा और सम्मान करे या आप ने अल्लाह तआला के साथ कुरबानी करने का जो वादा किया है उसे नेक निय्यत से निभाते रहें। आपकी नज़र इस बात हो कि पहले मेरे माता पिता ने जन्म से पहले मुझे वक्फ किया और फिर जवानी में कदम रखकर मैंने अपने वक्फ का नवीकरण किया इसलिए दुनिया की ओर नहीं देखना बल्कि ख़ुदा तआला की ओर देखना है और ख़ुदा तआला की जमाअत की ज़रूरत को देखना है इसलिए मैं जामिया में जाने के लिए अपने आप को पेश करूंगा और जब मुरब्बी बन गए तो हर मामले में ख़ुदा तआला के आगे ही झुकना है और लोगों के व्यवहार की कुछ परवाह नहीं करनी अर्थात इंसान तो वैसे ही हमेशा ख़ुदा तआला के ही आगे झुकता है और झुकना चाहिए लेकिन यहाँ मतलब है कि फिर यह नहीं देखना कि ओहदेदार क्या कह रहे हैं। अगर कोई शिकवे और ऐसी बातें पैदा हो जाएं तब भी बजाय बन्दों से व्यक्त करने के ख़ुदा तआला के आगे झुकना है। लोगों के व्यवहार की परवाह नहीं करनी।

एक वक्फ ज़िन्दगी ज़िन्दगी भर का वक्फ करता है। उस ने अपना जीवन अल्लाह तआला के धर्म के लिए काम करने के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर दिया जबकि एक अधिकारी कुछ साल के लिए अस्थायी अधिकारी बनाया जाता है। अत: अगर वह अर्थात अधिकारी जमाअत के लिए उपयोगी अस्तित्व नहीं बनता और सहयोग के बजाय समस्याएं पैदा करता है तो ख़ुदा तआला से दुआ मांगे कि ऐसे ओहदेदारों से अल्लाह तआला जान छुड़ा दे। क्योंकि मुरब्बियान की भी ज़िम्मेदारी है कि ओहदेदारों के लिए भी दुआ क्या करें कि वे उचित रास्ते पर चलने वाले हों। अल्लाह तआला आलमुल ग़ैब भी है और सब शक्तियों का मालिक भी है। इसके निकट अगर अधिकारी को उस के पद से हटाना बेहतर हो तो यह कर देगा और यदि अल्लाह तआला की नज़र में इस अधिकारी के कुछ अन्य गुणों के कारण सेवा में रहना बेहतर है तो यह कमज़ोरियां जो कुछ समस्याएं पैदा करती हैं अल्लाह तआला इस दुआ को स्वीकार करते हुए उनका सुधार कर देगा। तो यह अल्लाह तआला का काम है। मुरब्बी ने तो हर जगह सहयोग करना है और दुआ करनी है

इसी तरह ओहदेदारों और मुरब्बियों दोनों को यह बात भी कहना चाहता हूं कि जब हम जमाअत के लोगों से यह उम्मीद करते हैं कि उनके घरों में ओहदेदारों के बारे में बातें ना हों अर्थात नकारात्मक बातें तो फिर सदरों और अमीरों और ओहदेदारों और इसी तरह मुरब्बियों को भी हमेशा इस बात की पाबंदी करनी चाहिए कि उनके घरों में भी एक दूसरे से सम्बन्धित किसी प्रकार की नकारात्मक बातें न हों। हां सकारात्मक बातें बेशक हों ताकि मुरब्बियों की नस्लों में भी और उहदेदारों की नस्लों में भी जमाअत की प्रणाली और वाकफीन ज़िन्दगी और किसी भी रंग में जमाअत की सेवा करने वालों का सम्मान पैदा हो।

उहदेदारों और विशेष रूप से सदर और अमीर यह भी याद रखें कि जमाअत के लोगों के लिए भी हमेशा प्यार और मुहब्बत के पर फैलाएं। किसी प्रकार का पद मिलना आप का अपना कोई अधिकार नहीं था न है। यह विशेष रूप से अल्लाह तआला की कृपा है तो अल्लाह तआला के इस फज़ल पर बड़ी विनम्रता से सम्मान करें और समय के ख़लीफा ने आप पर जो भरोसा किया है और विश्वास करते हुए इस प्यारी जमाअत की निगरानी का काम सौंपा है उसका हक़ अदा करने की कोशिश करें। सदर और ओहदेदार अपनी जमाअत के हर व्यक्ति बड़े और छोटे को यह एहसास दिलाएं कि वे सुरक्षित पंखों के नीचे हैं जैसे मुर्गी अपने बच्चों को परों में ले लेती है। हमेशा प्रत्येक से नरमी और मुस्कुराते हुए बात करें। दफ्तर की कुर्सी आप में अहंकार के स्थान पर विनम्रता पैदा करने वाली हो। प्रत्येक ओहदेदार भी और प्रत्येक मुरब्बी के दरवाज़े हर किसी के लिए खुले हों। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श हमें हमेशा अपने सामने रखना चाहिए। रिवायत में आता है कि आप हमेशा मुस्कुरा कर मिला करते थे।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल अदब हदीस 6089)

इसी तरह कुछ लोगों को यह भी शिकायत है कि हमारा कोई मामला जमाअत के निज़ाम के पास जाता है तो महीनों इसका पता नहीं चलता हालांकि पिछले वर्ष में भी कई बार इस बारे में ख़ुत्बों में भी याद करवा चुका हूँ। मामलों को निपटाने में जल्दी किया करें लटकाया न करें। दूसरे अगर मामला किसी कारण मजबूरन लंबा हो रहा है कई बार वैध कारण होता है कोई आवश्यक अनुसंधान था अगर वह पूरी नहीं हो रही तो पीड़ित पक्ष को या शिकायतकर्ता को या अगर दोनों पक्ष हैं उन्हें बता दें कि कुछ देर लगेगी। उनके पत्र को बहरहाल ध्यान देना चाहिए। अगर पीड़ितों को उत्तर देकर तसल्ली करवा दी जाए और अधिकारी विशेष रूप से सदर और आमीर मुस्कुराते चेहरे के साथ लोगों से मिलें तो पीड़ित पक्ष का आधा कष्ट दूर हो जाता है और आधी शिकायत समाप्त हो जाती हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो हमें छोटी बात समझा दी कि कैसे हमारे आचरण होने चाहिए अगर उन पर अनुकरण करें तो सदर, अमीरों और उहदेदारों से जो लोगों को यह शिकायत है कि उनके व्यवहार से बेचैनियां पैदा होती हैं बेचैनियां पैदा न हों। दूसरों से अच्छे व्यवहार से पेश आने के बारे में एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मामूली नेकी को भी तुच्छ न समझो चाहे वह अपने भाई से मुस्कुरा कर मिलने की नेकी हो।

(सहीह मुस्लिम हदीस 2626)

अल्लाह तआला तो हर कर्म का बदला देता है। अच्छे चरित्र से व्यवहार करना भी इंसान की अच्छाइयों में वृद्धि का कारण बनता है। अत: हर एक को हर माध्यम से अपनी नेकियों के पलड़े भारी रखने की कोशिश करनी चाहिए।

ओहदेदारों को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जमाअत का कोई पद भी किसी प्रकार की बड़ाई पैदा करने के लिए नहीं है बल्कि विनम्रता में बढ़ाने के लिए है। इसलिए हर निर्णय और हर काम को अल्लाह तआला का भय दिल में रखते हुए और बेहद विनम्रता से न्याय की मांग को पूरा करते हुए करने की कोशिश करनी चाहिए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अधिकार वालों और हाकिमों को यह चेतावनी दी है अगर प्रत्येक ओहदेदार उसे सामने रखे, तो निश्चित रूप से अपने काम की गुणवत्ता और न्याय की मांग को पूरा करने में कई गुणा वृद्धि कर सकते हैं। एक मौके पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस को अल्लाह तआला ने लोगों का निगरान और ज़िम्मेदार बनाया है वह यदि लोगों की निगरानी और अपने कर्तव्यों को अदा करने और उनकी भलाई चाहने में कोताही करता है, तो उसके मरने पर अल्लाह तआला इसके लिए जन्नत हराम कर देगा।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 7151)

यह देखें कितनी सख्त चेतावनी है और इंसान को हिला देने वाली है। यदि ख़ुदा तआला और आख़िरत के दिन पर विश्वास हो तो प्रत्येक अधिकारी अपना हर काम अत्यधिक भय की हालत में करे।

एक अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला को लोगों में से अधिक प्रिय और उसके निकट न्याय प्रिय शासक होगा और अत्यधिक अवांछित और सबसे दूर अत्याचारी शासक होगा।

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 1329)

इसलिए अपनी ज़िम्मेदारियों को अत्यधिक बारीकी से देखने की कोशिश करनी चाहिए, तभी इंसाफ की मांग भी पूरे कर सकते हैं।

इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि जो ज़रूरत मंदों, ग़रीबों के लिए अपना दरवाजा बंद रखता है अल्लाह तआला भी उस की आवश्यकताओं के लिए आकाश का दरवाज़ा बंद कर देता है।

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 1332)

अत: अमीर से लेकर एक छोटे से क्षेत्र के ओहदेदार तक प्रत्येक ओहदेदार का काम है जमाअत की प्रणाली जो समय के ख़लीफ़ा के आसपास घूमती है और ओहदेदार उस के प्रतिनिधित्व में हर जगह निर्धारित किए गए है अपने कर्त्तव्य पूरे करें। ख़ुदा तआला से हमेशा उसका फज़ल मांगते रहते हैं।

इसी तरह ज़ैली संगठनों के ओहदेदार भी अपनी जिम्मेदारियों को समझें। ज़ैली तन्ज़ीमें भी, अंसार भी, लजना भी, ख़ुद्दाम भी प्रत्येक स्तर पर सक्रिय हों। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो का उद्देश्य संगठनों के गठन से यह था कि जमाअत का हर वर्ग सक्रिय हो और विभिन्न माध्यमों से जमाअत के विकास की कोशिश होती रहे और जमाअत के हर व्यक्तियों तक पहुंचा जा सके। महिलाओं तक भी, बच्चों तक भी, युवाओं तक भी, बुज़ुर्गों तक भी ताकि समय के ख़लीफा को हर माध्यम से खबर भी पहुंचती रहे इसके बारे में उसे भी पता होता है कि जमाअत की क्या अवस्था है। इसलिए प्रत्येक ओहदेदार धर्म की सेवा को अल्लाह तआला का एहसान समझते हुए करे और प्रत्येक से सहयोग भी करें। जमाअत की प्रणाली सदर, ओहदेदार और उप संगठनों का भी एक-दूसरे से सहयोग होना चाहिए। अगर यह आपसी सहयोग और सभी ज़ैली संगठन और जमाअत का निज़ाम भी सक्रिय हो तो जमाअत के विकास की गति कई गुना बढ़ सकती है। अत: इस बात को हमेशा सामने रखना चाहिए।

एक बात यह भी हर ओहदेदार याद रखे अगर किसी के अपने ख़िलाफ भी शिकायत हो या इस के ख़िलाफ इसे शिकायत पहुंचे और या उसके सामने उसके ख़िलाफ कोई बात करे तो उसे सुनने का हौंसला होना चाहिए। ओहदेदारों में सब से अधिक सहन होना चाहिए और बात करने वाले से बदला लेने के स्थान पर पहले अपने सुधार की कोशिश करनी चाहिए। अपना आकलन करना चाहिए कि कहीं मेरे में यह बुराई है या नहीं। यह ठीक कह रहा है या सही कह रहा है। यह भी बात भी न्याय की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए आवश्यक है।

जमाअत के लोगों से मैं यह कहना चाहूंगा कि वे भी अपने तक्वा की गुणवत्ता बढ़ाएं। नेकी और तक़वा में सहयोग का उन्हें भी आदेश है। अगर जमाअत के लोगों में नेकी और तक्वा में गुणवत्ता अधिक होगी तो ओहदेदार अपने आप नेकी और तक्वा में चलने वाले मिलते जाएंगे। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी समीक्षा की भी ज़रूरत है उसकी नेकी और तक्वा के क्या मानदंड हैं और क्या वे इस में वृद्धि की कोशिश कर रहा है अथवा नहीं। जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए जो उसके ज़िम्मेदारी आज्ञाकारिता के हवाले किया गया है। यह एक बड़ा दायित्व है जो जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति के सुपुर्द भी है कि तुम आज्ञापालन करो। आप के पालन का नमूने जहां आप को जमाअत से संबंध में बढ़ाऐंगे, वहाँ फिर अगली नस्लों को भी जमाअत से जुड़े रखेंगे। अगर नस्लों के तक्वा के, नेकी की गुणवत्ता उच्च हो तो फिर भविष्य की नस्लों में भी तक्वा पर चलेने वाले ओहदेदार भी मिलते चले जाएंगे।

इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद भी अपने दिलों में स्थापित करें और अपनी नस्लों के दिल में यह भी बिठा दें हमने अपना कर्त्तव्य अदा करना है और तंगी और ख़ुशहाली और ख़ुशी और नाख़ुशी और अधिकारों का हनन और प्राथमिक व्यवहार हर अवस्था में समय के हाकिम के आदेश को सुनना और आज्ञाकारिता करनी है।

(सहीह बुख़ारी किताबुल फितन हदीस 7056)

जमाअत में कोई सांसारिक हाकिम तो है नहीं, लेकिन जमाअत की प्रणाली की इताअत भी इसी रूह से होनी चाहिए चाहे हमारे ख़िलाफ बात है या हमारे हित में है

हम ने पालन करना है और अल्लाह तआला से दुआ करनी है और कोशिश करनी है और अगर समय के ख़लीफा तक या ऊपर ओहदेदारों तक पहुंचाया जा सकता है तो बात पुंहचानी है लेकिन किसी भी तरह का विद्रोह नहीं होना चाहिए।

प्रत्येक समय यह दुआ करते रहें कि हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार धार्मिक रूप से भी और सांसारिक रूप से भी ऐसे निगरान ओहदेदार और हाकिम मिलें जो हम से प्यार का व्यवहार करने वाले हों और जिनसे हम प्यार करते हैं। वे हमारे लिए दुआएं करने वाले हों और हम उनके लिए दुआ कर रहे हों और फिर हम अल्लाह तआला के इरशाद के कारण बनें जिस के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन फरमाएगा कि कहाँ हैं वे लोग जो मेरे प्रताप और मेरी महिमा के लिए एक दूसरे से प्यार करते थे। आज जबकि मेरी छाया के अतिरिक्त कोई छाया नहीं उन्हें अपने रहमत की छाया में जगह दूँगा।(सहीह मुस्लिम हदीस 2566) इसलिए जिसको अल्लाह तआला के साया में जगह मिल जाए उसको तो दोनों जहान की नेअमतें मिल गईं।

अल्लाह तआला करे कि हमारा हर काम ख़ुदा तआला की ख़ुशी के लिए हो। हम इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आशिके सादिक की जमाअत में शामिल होने का हक़ अदा करने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी जमाअत के लोगों से जो उम्मीदें थीं उनके अनुसार कार्य करने वाले हों।

इन के बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"ख़ुदा तआला चाहता है कि तुम्हें एक ऐसी जमाअत बना दे कि तुम दुनिया के लिए नेकी और सच्चाई का नमूना ठहरो।" फरमाया "अत: तुम होशियार हो जाओ और वास्तव में नेक दिल और ग़रीब स्वभाव और सच्चे बन जाओ।"

(मज्मूआ इश्तिहारात जिल्द 3 पृष्ठ 48 इश्तिहार नम्बर 188 अपनी जमाअत को सचेत करने के लिए एक ज़रूरी इश्तिहार) (सच्चाई की गुणवत्ता बहुत ऊंचे हो जाएं)

फरमाया "तुम्हारी मज्लिसों में कोई नापाकी और ठट्ठे और हँसी का काम न हो" (अर्थात वह हँसी जो उपहास के रंग में की जाती है। लोगों के मजाक़ उड़ाए जाते हैं) "और नेक दिल और पवित्र तबीयत और शुद्ध विचार होकर ज़मीन पर चलो।" (मज्मूआ इश्तिहारात जिल्द 3 पृष्ठ 47 इश्तिहार नम्बर 188 अपनी जमाअत को सचेत करने के लिए एक ज़रूरी इश्तिहार) अत्यंत विनम्रता होनी चाहिए।

अल्लाह तआला करे कि हम अपनी अवस्थाओं को इस तरह बनाते हुए अल्लाह तआला की रहमत ो साया में आने वाले हों।

☆ ☆ ☆

फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद
कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहस्सिलाम

जमालो हुस्ने कुरआँ नूरे जाने हर मुसल्माँ है
कमर है चान्द औरों का हमारा चान्द कुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फिक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ पैदा है उसकी हर इबारत में
न वो खूबी चमन में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
कलामे-पाके-यज़दाँ का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए अम्मा है वगर लअले बदख्शाँ है
ख़ुदा के कौल से कौले बशर क्योंकर बराबर हो
वहाँ कुदरत यहाँ दरमान्दगी फर्के नुमायाँ है
मलायक जिसकी हज़रत में करें इक़रारे-ला-इल्मी
सुख्न में उसके हमताई, कहाँ मक्दूरे इन्साँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूरे हक का उस पे आसाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाईयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे कुरबाँ

☆ ☆ ☆

जामिया अहमदिया कादियान में प्रवेश
नाज़िर तालीम कादियान

जामिया अहमदिया कादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित वह पवित्र संस्था है जिस से अब तक सैंकड़ों उलमा और मुबल्लिग़ीन पास होकर संसार में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को फैला रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने कई अवसरों पर अहमदी छात्रों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित इस पवित्र संस्थान में शिक्षा प्राप्त कर के सिलसिला की सेवा करने की तरफ ध्यान दिलाया है। अत: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के उपदेश की रोशनी में अधिक से अधिक वाकफीन नौ और दूसरे छात्र जामिया अहमदिया में प्रवेश लेकर धर्म की सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत करें। अत: वे छात्र जो जामिया अहमदिया में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं वे वक्फे नौ भारत (नज़ारत तालीम) विभाग से शीघ्र सम्पर्क करें और दाख़िला फार्म भर कर दफ्तर वक्फे नौ भारत (नज़ारत तालीम) में भिजवाऐं। हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से इस वर्ष से जामिया अहमदिया में प्रवेश अप्रैल से शुरू है। जामिया अहमदिया में प्रवेश प्रक्रिया के इच्छुक छात्र मैट्रिक और हाई सैकेण्डरी की परीक्षा समाप्त होते ही नतीजा आने से पहले अप्रैल, मई, जून तथा जुलाई में प्रवेश के लिए कादियान आकर प्रवेश परीक्षा दे सकते हैं। नतीजा आने पर Mark sheet जमा करवाई जा सकती है। प्रवेश के लिए नीचे लिखी शर्तें हैं।

1. मैट्रिक पास छात्र की आयु 17 साल हाई सैकेण्डरी पास छात्र की आयु 19 साल हो। आयु की सीमा में हाफिज़ों के लिए छूट दी सकती है।

2. जामिया अहमदिया में प्रवेश के लिए नेश्नल कैरियर पलानिंग कमेटी वक्फे नौ छात्रों का इन्ट्रवियू तथा लिखित टेस्ट लेगी। लिखित टेस्ट में कुरआन मजीद, इस्लाम अहमदियत,धार्मिक ज्ञान उर्दू अंग्रेज़ी और जनरल नालेज के बारे में प्रशन पूछे जाएंगे।

3. लिखित और इन्ट्रवियू में पास होने वाले छात्रों का नूर हस्पताल कादियान में मेडिकल टेस्ट होगा। लिखित टेस्ट, इन्ट्रवियू तथा मेडकिल टेस्ट में पास होने वाले छात्रों को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मंज़ूरी से जामिया अहमदिया में प्रवेश दिया जाएगा।

4. ग्रेजुएशन पास छात्रों को जामिया अहमदिया के प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी।

ज़िला के अमीर, अमीर जमाअत, सदर सहिबान, मुबल्लिग़ों तथा मुअल्लिमों से निवेदन है कि होशियार और योग्य सिलसिला की सेवा की भावना रखने वाले और नेकी का रुझान रखने वाले छात्रों को चुन कर उन्हें जामिया अहमदिया में प्रवेश के लिए तैय्यारी करवांए और शीघ्र ऐसे छात्रों के प्रवेश फार्म भर कर दफतर वक्फे नौ भारत में भिजवाएं।

प्रवेश फार्म ई मेल के द्वारा मंगवाने के लिए एडरस:

qdnwaqfenau@ gamail. com

INCHARGE WAQF-E- NAU DEPARTMENT
OFFICE WAQF-E-NAU INDIA (NAZARAT TALEEM)
M. T. A BUILDING, CIVIL LINE ROAD
DIST, GURDASPUR, PUNJAB, (INDIA) PIN 143516
CONTACT: 01872-500975,9988991775

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 13 April 2017 Issue No. 15

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह की उदारता

जब मुसलमान हिजरत करके मदीना पहुंचे तो वहां पीने के साफ पानी की बड़ी कमी थी। एक यहूदी का कुआं था जो मुसलमानों को पानी महंगे दामों में बेचता था। कुएं का नाम "बयर रोम" यानी रोम का कुआं था..

मुसलमानों ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शिकायत और अपनी परेशानी से अवगत कराया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "कौन है जो यह कुआं ख़रीदे और मुसलमानों को समर्पित कर दे। ऐसा करने पर अल्लाह उसे स्वर्ग में फव्वारा अता करेगा।"

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो अन्हो यहूदी के पास गए और कुआं खरीदने की इच्छा व्यक्त की । चूंकि कूंआ लाभदायक आय स्रोत था इसलिए यहूदी ने बेचने से इनकार कर दिया। हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो अन्हो ने यहूदी से कहा की पूरा कुआं न सही, आधा कुआं मुझे बेच दो,आधा कुआं बेचने पर एक दिन कुएं का पानी तुम्हारा होगा और दूसरे दिन मेरा होगा। यहूदी लालच में आ गया। उसने सोचा कि हज़रत उस्मान अपने दिन में पानी अधिक पैसों में ज्यादा पैसों में बेचेंगे, इस तरह अधिक लाभ कमाने का मौका मिल जाएगा। उस ने आधा कुआं हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो अन्हो को बेच दिया।

हज़रत उस्मान ने अपने दिन मुसलमानों को कुएं से मुफ्त पानी पीने की इजाज़त दे दी। लोग हज़रत उस्मान के दिन मुफ्त पानी प्राप्त करते और अगले दिन के लिए भी स्टोर कर लेते। यहूदी के दिन कोई व्यक्ति पानी ख़रीदने नहीं जाता। यहूदी ने देखा कि उसके कारोबार फीका पड़ गया है तो उसने हज़रत उस्मान से बाकी आधा कुआं भी ख़रीदने की गुजारिश की। इस पर हज़रत उस्मान राज़ी हो गए और पूरा कुआं खरीद कर मुसलमानों को समर्पित कर दिया।

इस दौरान एक व्यक्ति ने हज़रत उस्मान का कुआं दुगुनी क़ीमत पर खरीदने की पेशकश की। हज़रत उस्मान ने कहा कि मुझे इससे कहीं अधिक की पेशकश है। उस ने कहा तीन गुना दूँगा। हज़रत उस्मान ने कहा मुझे इससे कई गुना की पेशकश है। उसने कहा चार गुना दूँगा। हज़रत उस्मान ने कहा मुझे इससे कहीं अधिक की पेशकश है। इसके बाद वह आदमी राशि बढ़ाने लगा और हज़रत उस्मान यही जवाब देते रहे। यहाँ तक उस आदमी ने कहा कि हज़रत आख़िर कौन है जो आप को दस गुना देने की पेशकश कर रहा है?

हज़रत उसमान ने कहा कि मेरा रब मुझे एक गुना से अधिक दस गुना इनाम देने की पेशकश करता है।

☆ ☆ ☆

" मैंने जहां नौकर होना था हो चुका हूँ।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब तहरीर फ़रमाते हैं।

" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जवानी का समय था जबकि मनुष्य के दिल में सांसारिक विकास और सामग्री आराम की इच्छा अपने पूरे कमाल पर होती है और हुज़ूर के बड़े भाई साहिब एक प्रतिष्ठित पद पर आसीन हो चुके थे और यह बात भी छोटे भाई के दिल में एक ईर्ष्या या कम से कम नकल की प्रवृत्ति पैदा कर देती है। ऐसे समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पिता ने इलाके के एक सिख जमींदार द्वारा जो हमारे दादा साहब से मिलने आया था हज़रत मसीह मौऊद को कहला भेजा कि आजकल एक सत्ता के बड़े अधिकारी के साथ मेरे विशेष संबंध हैं यदि तुम्हे नौकरी की इच्छा हो तो मैं उस अधिकारी को कह कर तुम्हें अच्छी नौकरी दिला सकता हूँ। यह सिख जमींदार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हमारे दादा साहब का संदेश पहुंचा कर तहरीक की कि यह एक बहुत अच्छा मौका है इसे हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद ने इसके जवाब में फौरन कहा।

हज़रत पिता से निवेदन कर दो कि मैं इन के प्यार और स्नेह का आभारी हूँ मगर " मेरी नौकरी की चिंता न करें मैंने जहां नौकर होना था हो चुका हूँ।"

(सीरत-ए-तैयबा पृष्ठ 7, 8. हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद)

☆ ☆ ☆

वक्फे नौ के लिए महत्त्वपूर्ण घोषणा

सय्यदना हुज़ूर अनवर के निर्देश के अनुसार अब भारत के वाकफीन नौ की मंज़ूरी का पत्र और संदर्भ नम्बर लंदन से विभाग वक्फे नौ भारत में प्राप्त हो रहे हैं। बाद ही विभाग वक्फे नौ भारत स्वीकृति पत्र और संदर्भ संख्या पिता तक पहुंचाने की कार्रवाई कर रहा है। इसलिए वह माता पिता जो अपने बच्चे को तहरीक वक्फे नौ में शामिल करना चाहते हैं वे अपने आवेदन सीधे सय्यदना हुज़ूर अनवर की सेवा में पूरा पता के साथ फैक्स किया करें और उसकी सूचना फोन या ईमेल द्वारा कार्यालय वक्फे नौ भारत में कर के अपना ई ई मेल आईडी और पता नोट करवा दिया ताकि लंदन से मंज़ूरी का पत्र और संदर्भ संख्या के लिए फार्म आने पर विभाग वक्फे नौ भारत माता पिता तक मंज़ूरी और फार्म जल्दी भजवा सके। इसी तरह संदर्भ संख्या जारी करवाने की लिए भी पत्राचार वक्फे नौ विभाग भारत (नज़ारत तालीम) से की जाए। सीधे वक्फे नौ लंदन की E. Mail आईडी पर कोई मेल नहीं भिजवाई जाए। सारे सैक्टरी वक्फे नौ और माता पिता इस बात का पालन करें। बच्चे के जन्म के बाद फार्म देरी से भिजवाने पर बच्चा तहरीक वक्फ नौ में शामिल नहीं हो पाएगा। इसलिए माता-पिता जन्म के बाद संदर्भ संख्या जारी करवाने के लिए फार्म जल्द से जल्द दफतर वक्फ नौ भारत के नीचे पते पर पोस्ट या E.Mail द्वारा भिजवाएँ।

OFFICE WAQF-E-NAU INDIA (Nazarat Taleem)
Qadian-143516, Dist। Gurdaspur, Punjab
Office: 01872-500975 Mobile: 9988991775
E.Mail: qdnwaqfenau@gmail.com

(इंचार्ज विभाग वक्फे नौ भारत)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

किया (सत्य को स्वीकार न किया) तो वह हाविया में गिराया जाएगा। आथम इस भविष्यवाणी से अत्यधिक घबरा गया और डर गया। तथा नियत अवधि में उसने अपनी आदत के विपरीत बिल्कुल ख़ामोशी (चुप) साध ली शोख़ी तथा शरारत को छोड़ दिया बल्कि भविष्यवाणी सुन कर उस के हाथ काँपने लगे और मुँह का रंग उड़ गया मानो उसने हक़ की ओर रजूअ किया (सत्य को सत्य समझ लिया तथा इसका प्रभाव उस पर पड़ गया) परिणाम यह हुआ कि ख़ुदा तआला ने उसे मोहलत (कुछ समय) दे दी तथा कुछ समय के लिए वह अज़ाब से बच गया। इस पर विरोधियों ने शोर मचाना शुरू करदिया कि यह भविष्यवाणी झूठी निकली। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने इस पर मिस्टर आथम को चैलेंज किया कि यदि वह क़सम खा कर (शपथ ले कर) कह दे कि इस समय में उस पर इस्लाम का भय व्याप्त नहीं हुआ तो हम उसे एक हज़ार रु. इनाम देंगे। इनामी राशि को हुज़ूर ने फिर चार हज़ार रु. तक बढ़ा दिया) और इसके अतिरिक्त क्योंकि उसने झूठी क़सम खाई होगी इसलिए वह क़सम खाने के एक वर्ष के भीतर ज़रूर हलाक (मृत्यु) हो जाएगा। हुज़ूर ने लिखा कि यदि उसने क़सम न भी खाई तो भी ख़ुदा अब उसे सज़ा दिए बिना नहीं रहेगा ।

आथम ने क्योंकि क़सम खाने से इंकार कर दिया था इसलिए भविष्यवाणी के अनुसार उस की 27 जुलाई 1896 ई. को मृत्यु हो गई और इस प्रकार इस्लाम की विजय का एक ज़बरदस्त निशान सबके सामने प्रकट हुआ ।

अरबी में मुक़ाबले की ललकार

1893 ई. में ही आपने ग़ैर अहमदी विद्वानों को ललकारा कि वह अरबी में आपका मुक़ाबला करें। आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मुझे अरबी भाषा में पूर्ण योग्यता प्रदान फ़र्माई है इसलिए कोई भी व्यक्ति मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। आपके बार-बार चैलेंज देने के बावजूद किसी विद्वान को आपके सामने आने का हौसला न हुआ।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad